REVIEW OF RESEARCH

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 1 | OCTOBER – 2017

'संतोष खरे' के व्यंग्य संग्रह "यस नो थैंक्यू" में राजनीतिक व्यंग्य

अमनदीप कौर
पीएचडी (शोधार्थी) हिंदी,
हिंदी विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला.

प्रस्तावना :

जीवन संघर्ष का दूसरा नाम है हर युग में संघर्ष की अलग-अलग दिशाएं रही हैं कभी यह आंतरिक होता है तो कभी बाह्य है कभी यह मंद होता है तो कभी तीव्र। आधुनिक भौतिक उन्नति के युग ने इस संघर्ष को विविधमुखी बनाया है हमें एक साथ आंतरिक और भाइयों की लड़ाई लड़नी पड़ रही है। जिसके कारण हमारी मर्यादाएं टूट रही हैं एवं मानवीय संवेदनाएं बिखरकर तार-तार हो रही हैं। नवीनता और उन्नति की राह में अनजान बनकर हम अजनबी की त्रासदी को झेल रहे हैं। जीवन की इस त्रासदी ने मानवीय जीवन को उत्तरोत्तर लघु बनाया है जिससे उसमें हीन भावनाओं का आ जाना स्वाभाविक था। ऐसे में साहित्यकारों ने स्वयं को आंतरिक व बाह्य जीवन की विषमताओं से आहत महसूस किया तथा इसके निवारण हेतु व्यंग्य को हथियार बनाकर अपने दायित्व की पूर्ति की।

व्यंग्य से अभिप्राय

आधुनिक युग संघर्ष प्रधान युग है। इस संघर्षशील युग में संघर्ष, विघ्न बाधाएं एवं असफलताओं ने मानवीय जीवन को तहस-नहस कर के रख दिया है। जिसके कारण जीवन में नफरत, बदले की भावना, हीन भावना, कड़वाहट का आ जाना स्वाभाविक है। ऐसी विषमताओं और विडंबनाओं से युक्त परिवेश में रचनाकार ने जब स्वयं को आहत महसूस किया तो उसके रचना मानस ने विद्रोह कर दिया। परिवेश गत अंतर्विरोधों के कारण जब यह विद्रोह प्रत्यक्ष रुपमें संभव नहीं हो पाया तो रचनाकार ने व्यंग का सहारा लिया।

'ज्ञान प्रकाश' व्यंग्य के संबंध में कहते हैं कि "व्यंग्य साहित्यकार का वह अस्त्र है जिसके माध्यम से वह समस्त कटुताओं को काटने का प्रयास करता है । हंसी भी आए और लक्षित के मर्मस्थल पर चोट भी पहुंचे यही वयंग्य का सबसे बड़ा कर्म है।"[i]

व्यंग्य अपने आप में एक सकारात्मक रचना शैली है। व्यंग्य को समाज सचेतक के रूप में माना जा सकता है । समाज में पनपती बुराइयों के प्रति सचेत करने एवं उसे जड़ से उखाड़ फेंकने में व्यंग्य एक अहम भूमिका निभाता है। व्यंग्य एक ऐसा हथियार है, जो बड़े-बड़ों के मिजाज चुटकी में ठीक कर देता है।

विभिन्न परिभाषाएं

व्यंग्य को और अधिक स्पष्ट रुप से समझने के लिए विभिन्न विद्वानों द्वारा व्यंग्य की परिभाषाओं से सहायता ली जा सकती है। कतिपय प्रमुख विद्वानों की परिभाषाएं इस प्रकार हैं-

बरसाने लाल चतुर्वेदी- "आलंबन के प्रति तिरस्कार, उपेक्षा का भर्त्सना की भावना लेकर बढ़ने वाला हास्य-व्यंग्य कहलाता है।"[ii]

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी- "व्यंग्य वह है जहां कहने वाला अदृष्ट मैं हंस रहा हो और सुनने वाला तिलमिला उठा हो और फिर भी कहने वाले को जवाब देना अपने को और भी उपहासास्पद बना लेना हो जाता है।"[iii]

हरिशंकर परसाई- "व्यंग्य के जीवन से साक्षात्कार करता है, जीवन की आलोचना करता है विसंगतियां, विद्या चारों और पाखंडों का पर्दाफाश करता है।"[iv]

उपर्युक्त परिभाषाओं के आंकलन से स्पष्ट प्रतीत होता है कि शास्त्रीय दृष्टि से व्यंग्य, मानव तथा जगत की मूर्खताओं तथा आना चारों को प्रकाश में लाकर उनके उप हास्य अथवाघृणा उत्पादक रूप पर आलोचनात्मक प्रहार करने में समर्थ एक साहित्यिक अभिव्यक्ति है। व्यापक दृष्टि से देखा जाए तो संपूर्ण साहित्य आक्रोश को देंगे की संज्ञा दी जा सकती है।

व्यंग्य संग्रह (यस नो थैंक्यू) में राजनीतिक व्यंग्य- आधुनिककालीन निबंध साहित्य में व्यंग्य-विनोद लेखन की परंपरा में 'संतोष खरे' की रचना 'यस नो थैंक्यू' एक नवीन कड़ी है। जो इक्कतीस व्यंग्य निबंध लेखों का संकलन है मानव जीवन और जीवन के प्राय सभी पक्षियों की और निबंधकार का ध्यान गया है इन में सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक, धार्मिक, आर्थिक और शैक्षणिक आदि क्षेत्र प्रमुख हैं। परंतु निबंधकार ने राजनीतिक व्यंग्य को आधार बनाकर सबसे ज्यादा व्यंजन निबंध लिखे हैं। जिनमें एक छोटे शहर का चौराहा, राजनीति एक लाभप्रद व्यवसाय, भ्रष्टाचार एक लघु-शोध, खबरों के मकड़जाल में उलझा लेखक, एक भूतपूर्व सांसद की डायरी के कुछ पृष्ठ, एक समाज सेविका शब्द चित्र, एक जीनियस से साक्षात्कार, एक चमचे का दर्द, वह झल्लाकर अखबार फेंक देते हैं, एक विलक्षण प्रतिभा का परिचय, एक भूतपूर्व मंत्री की बेचैनी, जुगाड़ की कला आदि। अतः 'यसनो थैंक्यू' में राजनीतिक व्यंग्य की भरमार है।

व्यंग्य का राजनीतिक रुप- आधुनिक राजनीति ने दलबदलू अवसरवादी वह सिद्धांत हीनता का रूप धारण कर लिया है जिस कारण राजनेता पथ भ्रष्ट हो चुके हैं। इसी कारण भारतीय राजनीति पूर्ण रूप से दूषित हो गई है तथा इसके प्रदूषण का प्रभाव समाज के सभी अंगों पर पड़ा है। व्यंग्य में राजनीति की प्रधानता का मुख्य कारण यही है- व्यंग्यकार संतोष खरे ने 'यस नो थैंक्यू' में राजनीति में पैदा हुई जिन विसंगतियों पर प्रहार किया, उनका परिचय इस प्रकार है-

नेताओं की चरित्रहीनता पर व्यंग्य- निबंधकार ने राजनीति में पैदा हुई सर्वाधिक गहन और मूल समस्या और अधिकारों की उपयोगी मानसिक वृत्ति पर व्यंग्य करते हुए कहा है- "चौराहा दूर से आती हुई मरकरी लैंप की रोशनी देता है। यह ऑफिसर क्लब है। जहां अफसरों की शामें बृज और बीयर के साथ अच्छी तरह कट जाती हैं। अफसरों को इसके अतिरिक्त और चाहिए भी क्या।। चौराहे को इन लोगों से कोई लगाव नहीं है क्योंकि यह हमेशा अपनी कारों, जीवो से उसे रोते हुए निकल जाते हैं।"[v]

उपर्युक्त नेताओं की चरित्र हीनता से संबंधित उदाहरण के माध्यम से निबंधकार ने आधुनिक राजनेताओं में अधिकारी वर्ग की उपयोगी मानसिक वृत्ति को स्पष्ट करते हुए कहा है कि राजनेताओं ने राजनीति को एक व्यापार बना लिया है तथा व्यापक स्तर पर जनता की भावनाओं से खिलवाड़ किया है। जिससे इस का स्तर गिरता जा रहा है।

राजनीति भ्रष्टाचार पर व्यंग्य- भ्रष्टाचार वैसे तो समूचे जीवन में कैंसर की तरह फैल चुका है परंतु इसकी जड़ें राजनीति के अंदर तक धसी हैं। यही से इसे खाद पानी मिल रहा है। भ्रष्टाचार एक विश्वव्यापी समस्या बन चुका है। इसका जितना इलाज किया जाए यह उतना ही बढ़ता चला आ रहा है। निरंतर हो रहे घोटालों और भ्रष्टाचार के कारण जनसाधारण की प्रतिक्रिया के

संदर्भ में निबंधकार का कहना है- "लगातार घोटालों और भ्रष्टाचार की खबरों के कारण जनसाधारण की भावनाएं इतनी बुरी हो चुकी है कि कहीं कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखाई देती। जो काम सीधे ढंग से हो सकता है उसके लिए भी जनता की अतिरिक्त पैसा देने की मानसिकता बन चुकी है।"[vi]

उपर्युक्त उदाहरण के माध्यम से निबंधकार यह कहना चाहता है कि भ्रष्टाचार के कारण अमीर और अधिक अमीर तथा गरीब और अधिक गरीब होते जा रहे हैं। लोकतंत्र के चारों संभव में से राजनीति में सीधे रूप से जुड़े हुए नेता इस गोरखधंधे में लिप्त हैं। इस देश में भ्रष्टाचार का भविष्य उज्ज्वल वह नागरिकों का जीवन अंधकार में डूबता जा रहा है।

वर्तमान राजनीति : दलबदल का दलदल-भ्रष्टाचार राजनीति का एक पहलू है दल-बदल। यह भी आज राजनीति का पर्याय बन चुका है। सत्ता पिपासा अपने संपूर्ण राजनीतिक को सिद्धांतभंजक बना दिया है और जनमत का घोर अमूल्य भी किया है। निबंधकार ने राजनीतिक दल बदल गए अवसरवादी स्वरूप को व्यंग्यात्मक रूप से स्पष्ट करते हुए लिखा है-

"आज राजनीति के मापदंड बदल चुके हैं। जब जिस पार्टी का बोलबाला हो या जो पार्टी सत्ता में हो तत्काल उसमें शामिल हो जाइए। अखबार में एक वक्तव्य दीजिए कि अमुक पार्टी में आपकी आस्था नहीं रही। अतः सम्मुख पार्टी में जा रहे हैं अथवा आत्मा की आवाज पर दल बदल कर रहे हैं और फौरन सत्ता रूट पार्टी की सदस्यता ग्रहण कर लीजिए। इसमें कोई कठिनाई नहीं है। स्वयं देखिए कि किस तरह बड़े-बड़े नेताओं ने इसी तरह दलपरिवर्तित कर राजनीति में अपना नाम रोशन किया है। अपने यहां की राजनीति की यह एक गौरवशाली परंपरा है और हां जातिवाद पर विशेष आस्था रखना और उसके अनुरुप आचरण करना जरूरी है। इसका विशेष लाभ मिलता है।"[vii]

अर्थात् निबंधकार यह कहना चाहता है कि राजनीति में दलबदल की विसंगति बड़ी प्रबल है। सिद्धांत विहीन, राजनीतिक दलो में राजनीति के चतुर खिलाड़ी स्वार्थ सिद्धि हेतु प्रवेश करते हैं और उसके लिए कभी भी, किसी भी समय दल बदल कर लेते हैं। राजनीति के व्यवसायीकरण का यह भी एक अंग है।

लोकतंत्र का विघटन-आधुनिक राजनीति में लोक से अभिप्राय जनता ने रहकर पार्टी और पार्टी से तथाकथित तानाशाह बन गया है। जिसे लोकतंत्र का विघटन माना जाना चाहिए। इस संदर्भ में निबंध कारने व्यंग्यात्मक टिप्पणी करते हुए कहा है- "देश के सामान्य नागरिकों का इन्हें देख सुनकर स्टंट फिल्म जैसा मनोरंजन होने लगा है। उन्हें लगता है जैसे उनका देश घोटालों के गणतंत्र में बदल गया हो। अखबारों- पत्रिकाओं में प्रकाशित आंकड़ों के अनुसार जन सामान्य को बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए हर वर्ष 900 करोड़ रुपए की रिश्वत ली जाती है। भ्रष्टाचार के 88% मामलों में ढाई लाख की घूस मांगी जाती है। लगभग 75% रिश्वत ऐसी सेवाओं के लिए दी जाती है जो जनता का बुनियादी अधिकार है।"[viii]

अर्थात् भारत में लोकतंत्र प्रणाली की व्यवस्था, परंतु इन मौकापरस्त राजनीतिज्ञों के लिए लोकतंत्र सिर्फ एक शब्द मात्र से अधिक मायने नहीं रखता। धन बटोरना इनका प्रमुख लक्ष्य है।

निष्कर्ष –

उपयुक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि आधुनिक राजनीति व्यापार का प्रमुख साधन और भ्रष्टाचार का अड्डा बन चुकी है। निबंधकार ने राजनीतिक क्षेत्र में व्याप्त विसंगतियां जिसमें नेताओं की चरित्रहीनता, बरस राजनीतिक दल बदलू, सिद्धांतहीन एवं अवसरवादी स्वरूप और लोकतंत्र का विघटन आदि समस्याओं पर तीखे व्यंग्य किए हैं। उनका मानना है कि आधुनिक राजनीति भ्रष्ट लोगों का अड्डा बन चुकी है और भ्रष्टता उनका शहर स्वभाव। परिणाम 6 सामाजिक ढांचा चरमरा गया है। आज। प्रत्येक नेता पैसे कमाने और अपना बैंक बैलेंस बढ़ाने में लगा है और इसके लिए यह लोग आम जनता की भावनाओं को को चलते चले जाते हैं। कोई भी जनता की समस्याओं की ओर ध्यान नहीं देता।लोकतंत्र के चार स्तंभ इसे दूर करने में अक्षम सिद्ध हो रहे हैं। राजनेताओं की इन कूटनीतिक चालों का प्रभाव आम आदमी पर बहुत गहरा पड़ा है।

संदर्भ -

i ज्ञान प्रकाश, हिंदी की हास्य-व्यंग्यमयी कविता का संस्कृत विवेचन, अनुराधा प्रकाशन, मेरठ, प्रथम संस्करण 1986

ii बरसाने लाल चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य में हास्य रस, हिंदी साहित्य संसार, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1957

iii हजारी प्रसाद द्विवेदी, कबीर, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1991

iv हरिशंकर परसाई, सदाचार का ताबीज, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 24 मार्च, 2004

v संतोष खरे, यस नो थैंक्यू, मेधा बुक प्रकाश, 11, नवीन शाहदरा दिल्ली प्रथम संस्करण 2012

vi संतोष खरे, यस नो थैंक्यू, मेधा बुक प्रकाश, 11, नवीन शाहदरा दिल्ली प्रथम संस्करण 2012

अमनदीप कौर

पीएचडी (शोधार्थी) हिंदी, हिंदी विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला.